PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 3, ISSUE 2

कहानीकार प्रेमचंद

डॉ॰ एल॰ एस॰ मेवाड़ा
गुजराती विभाग
विजनयगर आर्ट्स कॉलेज
सरोली गुजरात भारत

मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य जगत के महान सर्जक हैं । हिन्दी उपन्यास और कहानी को उनकी लेखनी ने काफी समृद्ध किया है । परन्तु उपन्यासकार प्रेमचंद और कहानीकार प्रेमचंद में से किसी एक को चुनना हो तो उपन्यासकार प्रेमचंद का पलड़ा भारी होगा । प्रेमचंद की कहानियों में मार्मिक विषयवस्तु ,प्रासादिक आलेखन और भावाभिव्यकित की क्षमता ध्यानाकर्षक है । फिर भी स्वाभाविक रूप से ही उपन्यास पढ़ने और लिखने में उनकी विशेष रुचि थी । उन्हों ने इंग्लेंड के क्रिकेन्स और थैकरे जैसे लेखकों के उपन्यास पढे थे ,साथ ही युरोप के अनेक लेखकों के उपन्यासों का अभ्यास किया था । टोल्सटोय और मेक्सिमम गोर्की जैसे विदेशी उपन्यासकारों का उन पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है । अत: विस्तृत फ़लक पर उपन्यास की कल्पना करना उनके लिए स्वाभाविक ही था । उपन्यास में विशेष रस और रुचि होने के कारण शायद कल्पना के असीम आकाश में उड़ने की आजादी हो । कहानी के छोटे फ़लक पर उनकी प्रतिभा को खिलने का अवसर शायद कम मिलता हो ।

प्रेमचंद भारत के स्वाधीनता-संग्राम के समय के कथाकार हैं । उनकी दृष्टि समाज के सभी वर्गो एवं जनसमूहों पर थी । तत्युगीन भारतीय समाज में व्याप्त समस्याओं को उन्होंने बखूबी अपने कथा-साहित्य में निरूपित किया है । प्रेमचंद ने लगभग ३०० से अधिक कहानियाँ लिखी हैं । इन में से ५० कहानियाँ इतनी उत्कृष्ट हैं जो उनकी सर्जक प्रतिभा का परिचय कराती हैं । वे चेखव की तरह कहानी का सुनिश्चत आयोजन नहीं करते । उन्हों ने कहा है कि कहानी हृदय की वस्तु है ,नियम की नहीं । और नियम तो सहायक होने के लिए ही होते हैं । हृदय की भावनाओं के निरूपण में वे जब अनावश्यक हो ,तब उनका उल्लंघन करना चाहिए ।

इस प्रकार प्रेमचंद किसी निश्चित ढांचे में रहकर कहानियाँ नहीं लिखते । उनकी अनेक कहानियाँ ऐसी हैं ,जिनमें गाँवों के प्रचलित रस और शैली को अपनाया गया है । भारत के गाँवों कथा-भण्डारों से उन्होंने पाठक तक अपनी बात सचोट रूप से पहुँचाने की कला सीख ली है । उनकी अनेक कहानियों का आरंभ बिलकुल सरल रूप से होता है ,और यही कारण है कि उनकी कहानियाँ ज्यादा लोकप्रिय बन जाती हैं । इस प्रकार प्रेमचंद की कहानियों में धरती की सुगंध है ,हवा की ताजगी और महक है । प्रेमचंद ने भले ही ग्राम्य-कथाओं से कथा कहने की कला सीखी हो ,परन्तु उन्होंने उसका अंधानुकरण नहीं किया है । उनकी शैली मुख्यत: व्यंग्य-प्रधान है ,जिसकी अपनी अनूठी चोट है । इसमें भी एक प्रकार का काव्यत्व है जो पाठक के हृदय को स्पर्श करता है । प्रेमचंद की इन ग्राम्य-कथाओं में स्थान ,समय और घटना का विस्तृत वर्णन किया गया है । उनकी कहानियों में लाघव की जगह लहके के साथ आराम से कथा कहने की शैली मिलती हैं । शायद हमारी ग्राम्य कथाओं में से उन्हें यह शैली प्राप्त हुई हो । जरूरत पड़ने पर वे घटनाओं की आलोचना भी करते हैं । कहीं विलक्षण उपमा ,व्यंग्य या हास्य का अनुभव भी होता है । उनकी कहानियों को पढ़कर ऐसा महसूस होता है कि लेखक फुरसत के साथ आराम से लिखते हो ,जैसे ' दो बेलों की कथा ' कहानी में प्रथम परिच्छेद में वे गधों के गुणों का वर्णन करते हैं ,फिर बैल और गधे का तुलनात्मक परिचय देते हैं । त्त्पश्चात् वे अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं । इस प्रकार प्रेमचंद की कहानियों में गतिशीलता का अभाव देखने को मिलता है ,साथ ही घटनाओं में कौतुहल भी बहुत कम देखने को मिलता हैं । उनकी दृष्टि में घटना से ज्यादा पात्र महत्वपूर्ण होता हैं , अत: पात्र का मानस परिचय विशेष आवश्यक बन जाता है । पाठक को रहस्य या रोमांच से भरपूर कहानी देना उन्हें पसंद नहीं है ,जिसके कारण कभी-कभी उनकी कहानियाँ किसी चरित्र का आलोचन करके समाप्त हो जाती है ।

प्रेमचंद की कहानियों का आकर्षक तत्व उनकी विशाल पात्र-सृष्टि है । उनकी सर्वग्राही दृष्टि और धारदार स्मरण-शक्ति के कारण उन्हें इतने भिन्न-भिन्न प्रकार के पात्र मिल जाते हैं ,जो उनके व्यापक और गहरे अनुभव-जगत का परिचय देता है । उनके पात्रालेखन में ऐसी साहजिकता होती है कि कुछ ही क्षणों में पाठक पात्र के साथ एकरूप हो जाता है और कहानी के समापन के बाद भी लम्बे समय तक उसका प्रभाव पाठक के मन पर बना रहता है ।

प्रेमचंद सिर्फ मनोरंजन के लिए कहानी नहीं लिखते । उनकी कहानियों में जीवन का कोई नवीन दृष्टिकोण ,किसी समस्या का या गंभीर प्रश्न का समाधान मिलता है । सहृदय पाठक को रसानुभूति में कोई विक्षेप न हो इस प्रकार उपदेश देते हैं । वे परिस्थितियों का वर्णन इतनी मार्मिकता और सहजता के साथ करते हैं कि इसका अर्थ अपने आप ही मिल जाता है । वे शब्दचित्रों से ऐसे बिम्बों की रचना करते हैं कि पात्र ,घटना या परिस्थिति पाठक के सामने जीवंत हो उठते हैं । प्राय: उनके पात्रों का स्वभाव संवादों के माध्यम से व्यक्त होता है । संवादों में भी प्रेमचंद की भाषा का प्रभुत्व प्रकट होता है । इस प्रकार संवाद ,पात्र-निरूपण और विषयवस्तु -तीनों दृष्टियों से प्रेमचंद अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं ।

प्रेमचंद जीवन के बिल्कुल तट्स्थ रहकर निर्ममता के साथ परिस्थितियों का आलेखन नहीं करते । बहते हुए जीवन्प्रवाह से अछूते रहकर वे गंभीर चिंतन करनेवाले लेखक नहीं हैं । वे जीवन में सराबोर रहनेवाले ,जीवन को गति और नवीन दिशा देनेवाले साहित्यकार हैं । ' शतरंज के खिलाड़ी ' नामक कहानी में कला को कला के लिए माननेवाले लोगों का मज़ाक उड़ाया है । मिरज़ा और मीर ऐसे इन्सान हैं , जिनके लिए अपना मनोरंजन ही सर्वस्व है। देश की दुर्दशा और दुर्गति की भी वे परवाह नहीं करते । प्रेमचंद को देश की प्रजा के साथ गहरी सहानुभूति और प्रेम है । सामान्य किसान और दलित या अस्पृश्य जाति के पात्रों का चित्रण करते समय उनकी सहानुभूति और संवेदना का निरंतर अनुभव होता रहता है। वे गरीबी और अंधविश्वास को आदर्श बताकर निरूपित नहीं करते ,परन्तु वे इस अंधकार में से भी मानवता के दिपक को प्रज्जवलित करते हैं । इस दिपक की ज्योति धनकुबेरों के वैभव से बहुत ऊंची और महान होती है । सामाजिक शोषण और अन्याय का निरूपण वे निरंतर करते रहते हैं । कर्ज लेनेवालों की दुर्दशा उनकी कहानियों में प्राय: देखी जाती है । उस समय महाजनों के आर्थिक लेनदेन की प्रथा को कुछ लोग न्यायिक और आवश्यक समझते थे ,परन्तु प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में उस प्रथा की विसंगतियो व्यंग्यपूर्ण शैली में बेनकाब कर दिया है । प्रेमचंद स्वयं संयुक्त परिवार के समर्थक हो ,परन्तु आर्थिक अभावों के कारण परिवार विभक्त होता है । भाइयों के बीच के झगड़े ,विमाता का द्वेषपूर्ण व्यवहार और घर की चीज़वस्तुओं का बंटवारा आदि का प्रभाव उनकी कहानियों में दिखाई देता है । विधवा स्त्रियों के प्रति उन्हें अपार सहानुभूति है ।

पारिवारिक समस्याओं से लेकर राजकीय आंदोलनों तक के विषय प्रेमचंद की कहानियों के आधार बने हैं । प्रत्येक वर्ग को जिन समस्याओं का सामना करना होता है ,उस पर प्रेमचंद की दृष्टि बराबर बनी रहती है ,वे जिस समाज का निरूपण करते हैं ,उसका उसके पास गहरा अनुभव होता है | समाज में निहित अन्यायी ,अत्याचारी ,शोषणकर्ता और नफाखोर लोगों एवं विदेशी शासकों के ठेकेदारों के असलीरूप को प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में बखूबी उजागर किया है । वे आम प्रजा के सुखदु:ख के साथ खड़े रहनेवाले एक जागरूक और संवेदनशील लेखक हैं । विमाता के व्यवहार से परेशान बालक ,साधु-पुरोहितों द्वारा ठगे जानेवाले किसान, भूखे पेट दूसरों की बेगार करनेवाले अछूत और ब्याज भरने में पूरी मेहनत और जिंदगी झोंक देनेवाले किसानों की वास्तविक जिंदगी का निरूपण प्रेमचंद की कहानियों में बड़ी मार्मिकता के साथ हुआ है। कुशल कथाकार की विविधता और व्यापकता उनके पास थी । यही कारण है कि उनकी कथा-सृष्टि का फ़लक काफी विस्तृत होने के बावजूद भी कहीं कथावस्तु का पुनरावर्तन नहीं हुआ है । चित्रात्मक शैली ,असाधारण भाषा प्रभुत्व ,अदभूत पात्र-निरूपण कला और व्यंग्य की मार्मिकता प्रेमचंद को सर्वोत्कृष्ट कहानीकार के रूप में प्रस्थापित करते हैं ।

: संदर्भ सूचि :

१. कहानी नयी कहानी -नामवरसिंह
२. हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान -रामदरश मिश्र
३. हिन्दी के प्रतिनिधि कहानीकार -डॉ॰ द्वारिका प्रसाद सक्सेना